THE BUDGET (RAJASTHAN), 1967-68

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K C PANT) Sir, I beg to lay on the Table a statement of the estimated receipts and expenditure of the State of Rajasthan for the year 1967-68.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—*contd.*

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया (मध्य प्रदेश) उपसभाध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा करने के लिये रखा गया जो धन्यवाद का प्रस्ताव है उसके बारे मे यह निवेदन है कि साधारणत राष्ट्रपति जी का भाषण इस बात का द्योतक होता है कि हमारे यहा अगले वर्ष मे क्या होने वाला है। बहुत खेद के साथ मुझे कहना पडता है कि हमारी यह सरकार राष्ट्रपति जी के साथ भी मखौल करने मे नही चूकती। 1964–65 के अभिभाषण मे उन्होने यह कहा था कि ससद मे पेटेंट बिल पेश किया जायेगा और उसको पारित करेंगे। परन्तु खेद के साथ कहना पडता है उपसभाध्यक्ष महोदय, कि लाखो रुपया खर्च करने के बाद भी ऐसा लगता है कि विदेशियो के प्रभाव मे आना पडा, क्योकि जो पेटेंट बिल पारित होने वाला था ट्रेजरी बेच पर कोई मत्री तो रहना चाहिये।

SHRI SHEEL BHADRA YAJEE: No Minister is here.

[*At this stage the Minister of Law (Shri P. Govinda Menon) entered.*]

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M P. BHARGAVA): Yes, you continue now.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया: उपसभाध्यक्ष महोदय, अच्छा होता लन्च अवर कर देते तो हमारे मत्री महोदय को कष्ट नही होता। खास तौर से, जितनी बड़ी फौज काग्रेस ने अपने मंत्रियो की बना रखी है उतनी होने के बाद भी इतनी डिस्कर्टमी इतना अवमान, इतना अपमान, जिसके कारण ही दो दो बार चैमरमैन महोदय ने रिमार्क पास किये उसके बावजूद भी हमारे मत्री महोदय, जब कि किसी को बोलने को कहा, तब उठ कर चल दिये। वे समझे यह लन्च अवर हो गया।

श्री शीलभद्र याजी लोक सभा मे लन्च अवर होने लगा तो प्रथम बार यहा शुरूआत हुई कि यहा खत्म हुआ। कुछ लन्च का समय तो दिया जाय।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया: उपसभाध्यक्ष महोदय, मै कह रहा था यहा पर यह सरकार राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का मखौल उडाने मे नही चूकती क्योकि राष्ट्रपति जी के भाषण मे पेटेंट बिल की चर्चा तो हुई लेकिन बाद मे उसकी बात ही नही आई। 1964 एव 1966 मे भी राष्ट्रपति महोदय ने अपने अभिभाषण मे फसल बीमा योजना बिल का उल्लेख किया था लेकिन वह बिल 1964 मे नही आया, 1965 मे नही आया और 1966 मे नही आया, 1967 मे नही आया। इसी तरह से 1965 के अभिभाषण मे उन्होने बतलाया था कि आल इण्डिया हैण्डलूम बोर्ड पर एक बिल आयेगा, वह आया मगर लैप्स हो गया। 1966 मे राइस बिल से सम्बन्धित बिल के बारे मे रेफरेन्स दिया था, वह आया लेकिन वह भी लैप्स हो गया। इसलिये मै प्रार्थना करूगा कि कम से कम राष्ट्रपति महोदय के मख से गलत बात कहलाने का कष्ट न किया करे।

श्रीमन्, चतुथ आम चुनाव के बारे में हमारे राष्ट्रपति महोदय ने साधारणत. उसको ठीक बताया, कुछ हिंसा और उपद्रवों की घटनाओ की चर्चा करके। मगर आश्चर्य है